प्रातः क्लास 13-7-68 ओमशान्तिः पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः "मीठे2 रूहानी बच्चों को बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करो।"

ओमशान्ति। इनका अर्थ तो बच्चों को समझाया है। बाप भी बोलते हैं ओमशान्ति। बच्चे भी बोलते हैं ओमशान्ति। क्योंकि आत्मा का स्वधर्म है शान्ति। तुम अभी जान गये हो कि हम शान्तिधाम से यहां आते हैं पहले2 सुखधाम में। फिर 84 पुनर्जन्म लेते2 दुःखधाम में आते हैं। यह तो याद है ना। बच्चे 84 जन्म जीवात्मा बनते हैं। बाप जीवात्मा नहीं बनते हैं। कहते हैं मैं टेम्परारी इनका आधार लेता हूं। नहीं तो पढ़ावेंगे कैसे। बच्चों को घड़ी2 कैसे कहेंगे कि मन्मनाभव। अर्थात मुझे याद करो और अपनी राजाई को याद करो। इसको कहा जाता है सेकण्ड में विश्व की बादशाही। बेहद का बाप है ना। तो जरूर बेहद की खुशी, बेहद का वरसा ही देंगे। भारत में ही आकर बच्चों को बाप बेहद का वरसा देते हैं। आज से 5000 वर्ष पहले तुम भारतवासी विश्व के मालिक थे जिसको सुखधाम भी कहते हैं। बाप बहुत2 सहज रास्ता बताते हैं। मीठे2 बच्चों अभी दुःखधाम को बुधि से निकाल दो। यहां बहुत दुःख है। इनको बुधि से निकाल दो। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं उनका मालिक बनने लिए मुझे याद करो। तो तुम्हारे सभी पाप कट जायेंगे। तुम फिर से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम जानते हो हम सतोप्रधान थे, फिर पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बने। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। इसको कहा जाता है सहज याद। जैसे बच्चे लौकिक बाप को कितना सहज याद करते हैं। वैसे तुम बेहद के बच्चों को भी बेहद के बाप को याद करना है। बाप ही दुःख से निकाल सुख में ले जाते हैं। वहां तो दुःख का नाम-निशान नहीं। बहुत सहज बात कहते हैं अपने शान्तिधाम को याद करो। जो बाप का घर है वह तुम्हारा घर है। और स्वर्ग नई दुनिया को याद करो। वह तुम्हारा राजधानी है। बाप तुम बच्चों की कितनी निष्काम सेवा करते हैं। तुम बच्चों को सुखी कर वानप्रस्त परमधाम में बैठ जाते हैं। तुम भी परमधाम के वासी हो। जिसको निर्वाणधाम, वानप्रस्त भी कहा जाता है। बाप आते ही हैं बच्चों की खिजमत करने अर्थात वरसा देने। यह खुद भी बाप से वरसा लेते हैं? शिव बाबा तो है ऊंच ते ऊंच भगवान। शिव को मंदिर भी हैं। उनका कोई बाप वा टीचर नहीं। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान उनके पास है। कहां से आया? क्या कोई वेद-शास्त्र आदि पढ़े? नहीं। बाप है ही ज्ञान का सागर। वह सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। बच्चे महिमा भी करते हैं बराबर बाप सुख का सागर है, शान्ति का सागर है, पवित्रता का सागर है। यह महिमा और कोई की भी नहीं होती। विश्व के आदि मध्य अन्त का राज जो सुनाते हैं उनकी वायोग्राफी आक्युपेशन ही अलग है। फिर ऊंच ते ऊंच हैं जो विश्व के मालिक बनते हैं। जिनको ल०ना० कहते हैं। इन्हों की महिमा अलग है। जो पूरे 84 जन्म लेते हैं, उनकी महिमा करते हैं सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण ... फर्क है ना। बाप की महिमा और दैवी गुणों वाले मनुष्यों की महिमा में। इन्हों को यह दैवी गुणों की प्राप्ती हुई है बाप से। तुम ही दैवी गुण धारण कर यह देवता बनते हो। पहले आसुरी गुण थे। असुर कहलाते थे। असुर से देवता बनाना यह तो बाप का ही काम है। एमआबजेक्ट भी तुम्हारे सामने हैं। तुम जानते हो पहला2 हमारा जन्म यह था। जरूर ऐसे श्रेष्ठ कर्म किये होंगे। कर्म-अकर्म-विकर्म की गति अथवा हर बात समझाने में सेकण्ड लगता है। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुम आत्माओं को पार्ट तो बजाना ही है। यह पार्ट तुमको अनादी अविनाशी मिलाहुआ है। यह कब विनाश को नहीं पाता। तुम कितना बारी सुख-दुःख के खेल में आये हो। कितना बारी तुम विश्व के मालिक बने हो फिर हार खाये हो। तुम विश्व के मालिक थे, कितने सुखी थे। अभी तो कुछ भी नहीं है। जमीन का टुकड़े2 भी नहीं मिल सकता। कितना ऊंच बनते हो फिर कितना नीच होते हो। ऊंच को सतोप्रधान, नीच को तमोप्रधान कहा जाता है। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान में, फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान में तुम कल्प कल्प आते हो। यह भी विचार करो आत्मा कितनी छोटी है। उसमें कितना पार्ट भरा हुआ है। आत्मा भी छोटी, और परमपिता परमात्मा जो सुप्रीमसोल है वह भी इतने छोटे हैं। वह बाप

ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है ... है। तो तुम आत्माओं को भी आप समान बनाते हैं। तुम भी प्रेम का सागर, सुख का सागर ... बनते हो। देवताओं का आपस में कितना प्रेम है। कब झगड़ा नहीं होता। धनी आकर आप समान बनाते हैं। और कोई ऐसा बना न सके। तुम ने कितनी भक्ति की है। यज्ञ-तप, दान-पुण्य आद जन्म-जन्मान्तर किये हैं, उनका नतीजा क्या हुआ। तुम जानते हो सीढ़ी नीचे ही गिरते आये हो। रावण राज्य के कारण पतित बनते आये हो। अभी तुमको स्मृति आई है। हम पावन पूज्य थे, फिर पुनर्जन्म लेते2 पतित पुजारी बने हैं। भगवान के लिए कहना कि आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी; यह तो उनकी ग्लानी की जाती है। भगवान कैसे पुजारी बनेंगे। बाप आकर समझ देते हैं। उसने कोई शास्त्र आद पढ़ा है क्या। कुछ भी नहीं। अनायास ही ड्रामा में पार्ट है। वह ज्ञान का सागर है। सारी आदि मध्य अन्त को जानता है। मूलवतन-सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन। खेल स्थूल वतन में ही होता है। पलहे2 आदी सनातन देवी-देवता धर्म के पार्ट बजानेवाले आते हैं। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी। फिर इस्लामी, बुद्धी। नम्बरवार तुम समझ गये हो कौन2 इस भाण्डे में, वा नाटकशाला में आते हैं। 84 जन्म तुम लेते हो। गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... पहले2 तुम आत्मायें आये। तो बाप से तुम अलग हुये हो। भल वह गाते हैं परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। कौन सी आत्मायें बहुत समय अलग रही है। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों पहले2 विश्व में पार्ट बजाने तुम आये थे। तुम ने ही 84 जन्म लिये। मैं तो सिर्फ थोड़े समय के लिए इनमें प्रवेश करता हूं। यह तो पुरानी जुती है। पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं पुरानी जुती गई अभी फिर नई लेने हैं। यह भी पुराना तन है ना। 84 जन्मों का चक्र लगाया हुआहै। स्वयं। तो मैं आकर इस रथ का आधार लेता हूं। पावन दुनिया में तो मैं कब आता ही नहीं हूं। तुम पतित ही मुझे बुलाते हो कि आकर पावनबनाओ। बुलाते2 आखीरीन तुम्हारी याद फलीभूत तो होगी ना। जब पुरानी दुनिया खत्म होने का समय होता है तब मैं आता हूं। ब्रहमा द्वारा स्थापना। ब्रहमा द्वारा अर्थात तुम ब्राहमणों द्वारा। ब्राहमणों की चोटी कहा जाताहै ना। पहले2 चोटी। ब्राहमण फिर देवता क्षत्री ... यह तुम बाजोली खेलते हो। 84 जन्मों का राज़ कितना सहज कर समझाते हैं। वह लोग त्रिमूर्ति बनाते हैं, कहते भी हैं ब्रहमा द्वारा स्थापना, परन्तु किसकी? वह तो जानते ही नहीं। तुम समझते हो विष्णु राज्य की स्थापना। जिसको ल०ना० का राज्य कहते हैं। समझानी तो बहुत ही सहज है। एक तो अपने को आत्मा समझना है। देह अभिमान को छोड़ देहीअभिमानी बनना है। तुम 84 शरीर लेते हो। मैं तो एक ही बार सिर्फ इस तन को लोन लेताहूं। किराया पर लेता हूं। हम इस मकान के मालिक नहीं हैं। इनको तो फिर भी हम छोड़ देंगे। किराया तो देना पड़ता है ना। बाप भी कहते हैं मैं इस मकान का किराया देता हूं। वेहद का बाप है, कुछ तो किराया देते होंगे ना। यह तख्त लेते हैं तुमको समझाने के लिए। ऐसा समझाते हैं जो तुम विश्व के तख्त नसीन बन जाते हो। खुद कहते हैं मैं नहीं बनता हूं। तख्त नसीन अर्थात ताऊसी तख्त। शिव बाबा की याद में ही सोमनाथ का मंदिर बनाया है। बाप कहते हैं उससे मुझे क्या टेस्ट आवेगी। जड़-पुतला रख देते हैं। मजा तो तुम बच्चों को स्वर्ग में है। मैं तो स्वर्ग में आता ही नहीं हूं। फिर भक्ति मार्ग शुरु होता है तो यह मंदिर आद बनाने कितना खर्चा किया। फिर भी चोर लूट कर ले गये। अभी वह ताऊसी तख्तहै? बाप कहते हैं हमारा जो बनाया हुआ था वह गजनवी आकर लूट ले गये। रावण के राज्य में तुम्हारा धन-दौलत आद सभी खलास हो जाता है। जितने तुम साल्वेन्ट थे। भारत जैसा साल्वेन्ट और कोईदेश नहीं। भारत जैसा तीर्थ और कोई बन नहीं सकता। भारत की महिमा अपरमअपार है। भारत ही बड़े ते बड़ा तीर्थ था। परन्तु आजकल तो हिन्दुधर्म के अनेक तीर्थ हो पड़े हैं। वास्तवमें बाप जो सर्व की सदगति करते हैं तीर्थ तो उनका होना चाहिए। यह भी ड्रामा बना हुआ है। समझाने में बहुत सहज है। परन्तु नम्बरवार ही समझते हैं। क्योंकि यह राजधानी स्थापन हो रही है। सतयुग आदि के मालिक यह हैं ना। यह हैं उत्तम ते उत्तम पुरुष। जिनको फिर देवता कहा जाता है। दैवी गुण वाले को देवता कहा जाता है। यह ऊंच ते ऊंच ध

वाले प्रवृति मार्ग वाले थे। उस समय तुम्हारा ही प्रवृति मार्ग रहता है। सन्यास धर्म वाले वहां हो न सके। वह राजाई को अच्छा समझते ही नहीं है। काग विष्टा समान सुख कह देते हैं। करप्शन, एडल्ट्रेशन कितनी की है। बाप की बायोग्राफी में नाम दूसरे काडालादिया है। तो जैसे कि दूध में पानी डाल दिया है। इतने बड़े2 विद्वान-पंडित आद कोई भी इस भूल को नहीं जानते। बेहद का बाप जो कल्प2 बरसा देते हैं उनकी कितनी ग्लानी की है। गालादी है कच्छ अवतार-मच्छ अवतार। सर्वव्यापी का ज्ञान बुद्धि में है ना। तो इसको कहा जाता है बाप की अति ग्लानी। तो बाप डौरापा देते हैं कितनी मेरी ग्लानी की है। कृष्ण कोकितनी गालियां दी है कि इतनी 16108 रानियां थीं। (निजाम का मिसाल) बाप ने तुमको डबल सिरताज बनाया, रावण ने फिर दोनों ही ताज उतार दिया। अभी नो ताज। न पवित्रता का ताज, न धन का ताज। दोनों ही रावण ने उतार दिया है। फिर बाप आकर दोनों ताज तुमको देते हैं। याद और पढ़ाई से। इसलिए सभी गाते हैं। विलायत वाले भी कहते हैं ओ गाड फादर। हमारा गाईड बनो। तिबरेटभी करो। तब तुम्हारा नाम भी पण्डा रखा हुआ है। पाण्डव कौरव क्या करत भये। कहते हैं हे बाबा हमको इस दुःख के राज्य मू छूड़ा कर साथ ले जाओ। यह सच्ची2 कहानी बाप तुमको सुनाते हैं। बाप ही सच्चखण्ड स्थापन करते है जिसको स्वर्ग कहा जाता है। फिर उनको झूठखण्ड रावण बनाती है। वहरामराज्य वह रावण राज्य। वह राम नहीं जिसको सीता चुराई गई। कितनी ग्लानी की बात लिख दी है। मेरी भी ग्लानी कर दी है। कितनी भूलहै। परन्तु ऐसे भूल को भारत वासी जानते नहीं हैं। सभी कह देते हैं कृष्ण भगवानुवाच:। बाप कहते हैं शिवभगवानुवाच:। भारतवासियों ने नाम बदल लिया है। कृष्ण तो है देहधारी। विदेही तो एक शिव बाबा है। हिन्दु कहलाने वाले अपने को चमाट मारी है। धर्मभ्रष्ट-कर्मभ्रष्ट बने हैं। इसलिए मुसलमान लोग भी काफिर कहते है? उनको न अपना धर्म है, न धर्म पर ईमान है तो अपना धर्म ही छोड़ दिया है। अभी बाप द्वारा तुम बच्चों को कितनी शक्ति मिलती है। सारे विश्व के तुम मालिक बनते हो। सारा आसमान धरती तुमको मिल जाती है। कोई की ताकत नहीं जो तुम से छीन सके पौना कल्प। उन्हों की तो जब बुद्धि हो, करोड़ों का अन्दाज में हों तब लश्कर लेआकर तुमको जीते। बाप बच्चों को कितना सुख देते हैं। उनका गायन है ही दुःखहर्तासुखकर्ता। इस समय बाप तुमको कर्म, अकर्म, विकर्म की गति बैठ समझाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं। सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते हैं। सन्यासी लोग भल अक्षर पढ़ते हैं परन्तु समझते नहीं। उनको समझाने का ही नहीं। वह तो है ही निवृर्ति मार्ग वाले। इन गुरुओं ने तो सभी की सत्यानाश कर दी है। सद्गुरु तो अकालमूर्त है। अभी तुमको एक सद्गुरु मिला है जिस को पतियों का पति कहा जाता है। क्योंकि वह पति लोग भी उनको याद करते हैं। तो बाप समझाते हैं यह कितना बन्डर फुल ड्रामा है। इतनी छोटी सी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। जो कब मिटने का नहीं है। इनको अनादी अविनाशी ड्रामा कहा जाता है। गाड इन वन। रचना अथवा सृष्टि भी एक ही है। न रचना को न रचयिता के आदि मध्य अन्त को कोई जानते। यह ही नहीं जानते थे तो फिर और कैसे जान सकते। ऋषि-मुनि भी कह देते थे हम नहीं जानते हैं। यह है ही नास्तिकों की दुनिया। वह है आस्तिकों की दुनिया। सतयुग में लड़ाई झगड़ा आद कुछ होती। अभी तुम संगम पर बैठे हो। माया के साथ है युद्ध। वह छोड़ती नहीं कहते हैं हम विकार में कभी नहीं जावेंगे। खून से लिखकर देते हैं फिर देहअभिमान में आने से माया का थप्पड़ लग जाताहै। की कमाई चट हो जाता है। भगवान पढ़ाते हैं तो अच्छी रीत पढ़ना चाहिए ना। ऐसी पढ़ाई तो फिर 5000वर्ष के बाद मिलेगी। वही सुप्रीम बाप, टीचर, गुरु भी है। वही सर्व की सदगति करते हैं। कितनी अच्छी कहानी है। यह भूलना न है। टीचर कोकब भूलना न है। एक भूले तोदूसरे, तीसरे। तब बाप घड़ी2 कहते हैअपने को सदैव आत्मा निश्चय करो। आत्मा अविनाशी, शरीर विनाशी है तुम उल्टा लटक पड़े हो। अभी बाप आकर सुल्टा बनाते हैं। अच्छा। बेहद के बाप को याद करना है। तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम्हारी एमआबजेक्ट तो बराबर सामने खड़ी है। आत्मा को 84 के चक्र की नालेज मिली है। तो तुम बने हो स्वदर्शनचक्र धारी। फिर जो ब्राह्मण से देवता बनते हैं तो यहनालेज रहती नहीं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।